जीना, मरना, दफन होना, जी उठना, आगमन
LIVING, DYING, BURIED, RISING, COMING
मार्च 29, 1959, ईस्टर प्रातः

यह उन सब बातों से परे है जो कि हम मानवीय भाषाओं में प्रकट कर सकते हैं कि आज हमारे हृदय में कैसी अनुभूति हो रही है, जब कि हम यहाँ इस महा पवित्र और पावन सुबह में एकत्र हुये हैं। यह सुबह उस समय का प्रतीक है जबकि हमारा धर्म वास्तविक बना था, क्योंकि यह आपके उस अनमोल बेटे का पुनः जी उठना था जो कि सारी मानव जाति को छुड़ाने के लिये आया था। और परमेश्वर, आज इस प्रातः हम उस महान व सर्वोच्च विजय को मनाने हेतु एकत्र हैं, जिसने कि हमें मृत्यु और अद्योलोक दोनों पर और कब्र पर विजयी होने स भी ज्यादा बना दिया है। और हम आपका धन्यवाद करते हैं कि इतने सारे वर्षों के गुजर जाने के पश्चात, हम आपेकी आराधना करने के लिये इस ईस्टर की सुबह एकत्र होते हैं, क्योंकि हम विश्वास करते हैं कि वह फिर आयेगा।

2. और हम प्रार्थना करते हैं कि आप हमारे सारे पापों को और सारी गलतियों को क्षमा करेंगे, जिनका लेखा हमारे विरोध में लिखा गया है, जबकि हम नम्रता से अपनी गलतियों को मानते हैं, और अपने पापों के लिये उसके प्रायश्चित को ग्रहण करते हैं। परमेश्वर, हमारे बीच में जो बीमारियाँ हैं, उनको चंगा कीजिए। हमारी सहायता कीजिए जब कि हम आपके वचन को पढ़ते हैं, जो कि सारी सच्चाईयों की नींव है, और जिसको कि आप हमारे जीने के लिए और विश्वास करने के लिए छोड़ कर गये हैं:

3. और हम इस झुण्ड के लिये ही प्रार्थना नहीं करते जो कि यहाँ पर एकत्र है, पर उन सभी के लिये जो कि संसार में चारों तरफ हैं, क्योंकि हम उत्सुक आँखों और लालायित हृदयों के साथ उसके आने की बाट जोह रहे हैं। हम आज अधियारे में और गड़बड़ी में खड़े हुए हैं, जबकि हम जानते हैं कि बस किसी भी वक्त कोई कट्टरपंथी किसी बात पर अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठे, और किसी छोटे से बटन को दबा दे, और

सम्पूर्ण संसार टुकड़े–टुकड़े हो सकता है। जैसा कि हमें बड़े अधिकारियों ने बताया है कि यदि युद्ध कभी फिर से होता है, तो वह मात्र कुछ घंटे लम्बा ही होगा। ओह मेरे परमेश्वर! जैसे कि हम आज एक और युद्ध के बहुत नज़दीक खड़े हुये हैं। तब कलीसिया उस महान महिमायुक्त पुर्नरूत्थान के नजदीक खड़ी हुयी है, क्योंकि हम सोये हुये सन्तों के साथ ऊपर उठा लिये जायेंगे ताकि हम प्रभु से हवा में मिलें, और सदा उसके साथ रहें।

4. हम आपकी आराधना करने आये हैं परमेश्वर। और आज हमें ग्रहण कीजिए। अपने वचन के पढ़े जाने को, गीत गाने को, वचन के प्रचार करने को आशीषित कीजिये, पश्चातापी प्रार्थनाओं को ग्रहण कीजिए। बीमारों के लिये प्रार्थना को सुनिये, और अपनी महिमा होने दीजिये, क्योंकि हम नम्रता से आपके बेटे यीशू के नाम में माँगते हैं। आमीन।

5. और आप जो कि लिखना माँगते हैं कि हम इस प्रातः वचन में से कहाँ से पढ़ेंगे।

6. और हम क्षमा चाहते हैं यह जानकर कि हमारे पास इन अच्छे लोगों के झुण्ड को बैठाने के लिये जगह नहीं है जो कि हमारे साथ आराधना करने के लिये विभिन्न गिरजों से और विभिन्न प्रान्तों से और यहाँ तक कि विभिन्न राष्ट्रों से इस प्रात जल्दी आ गये हैं, परमेश्वर की इस महान महिमायुक्त आराधना करने के लिये इस प्रातः टेबरनेकिल में एकत्र हुये हैं।

7. मैं चाहता हूँ कि आप भजन संहिता की पुस्तक, उसका 22वाँ अध्याय निकालें। मैं जानता हूँ कि ईस्टर की आराधना में पढ़ने के लिये यह कुछ असाधारण सी जगह है, परन्तु परमेश्वर असाधारण है।

8. अब इस आराधना सभा को हम एक घंटे के बाद समाप्त करेंगे, ताकि आप अपने नाश्ते पर जा सकें। और फिर सन्डे स्कूल की सभा साढ़े नौ बजे शुरू होगी। और सन्डे स्कूल की सभा के ठीक बाद यहाँ जल–कुण्ड में बपतिस्मे की सभा होगी। और फिर इस दोपहर बाद छः बजे, आज रात्रि की चंगाई सभा के लिये प्रार्थना कार्ड दिये जायेंगे। और अगर आपके कोई प्रिय जन हैं जो कि बीमार हैं और आवश्यकता में हैं, तो आज रात्रि उनको

यहाँ लाना न भूलें, क्योंकि यह आखिरी बार होगा कि हम इसे कुछ–कुछ समय के लिये, हर हालत में कर सकते हैं। मैं प्रातः पाँच बजे लास ऐंजल्स व पश्चिमी तट में सभाओं की एक श्रृंखला करने के लिये रवाना होऊंगा।

9. अब भजन संहिता के 22वें अध्याय में हम पढ़ेंगे।
हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?
तू मेरी पुकार से और मेरी सहायता करने से क्यों दूर रहता है?
मेरा उद्धार कहाँ है?
हे मेरे परमेश्वर, मैं दिन को पुकारता हूँ परन्तु तू उत्तर नहीं देता, और रात को भी मैं चुप नहीं रहता।
परन्तु हे तू जो इस्त्राएल की स्तुति के सिंहासन पर विराजमान है, तू तो पवित्र है।
हमारे पुरखा तुझी पर भरोसा रखते थे, वे भरोसा रखते थे, और तू उन्हें छुड़ाता था।
उन्होंने तेरी दोहाई दी और तू ने उनको छुड़ाया
वे तुझी पर भरोसा रखते थे और कभी लज्जित न हुए।
परन्तु मैं तो कीड़ा हूँ, मनुष्य नहीं, मनुष्यों में मेरी नाम धराई है, और लोगों में मेरा अपमान होता है।
वह सब जो मुझे देखते हैं मेरा ठट्ठा करते हैं, और ओंठ बिचकाते और यह कहते हुए सिर हिलाते हैं,
कि अपने को यहोवा के वश में कर दे वही उसको छुड़ाए, वह उसको उबारे क्योंकि वह उस से प्रसन्न है।
परन्तु तू ही ने मुझे गर्भ से निकाला, जब मैं दूध पिउवा बच्चा था, तब ही से तू ने मुझे भरोसा रखना सिखलाया।
मैं जन्मते ही तुझी पर छोड़ दिया गया, माता के गर्भ ही से तू मेरा ईश्वर है।
मुझ से दूर न हो क्योंकि सकट निकट है, और कोई सहायक नहीं। बहुत से साँढ़ों ने मुझे घेर लिया है।

बाशान के बलवन्त साँढ़ मेरे चारों ओर मुझे घेरे हुए हैं।

वह फाड़ने और गरजने वाले सिह की नाई मुझ पर अपना मुँह पसारे हुए हैं।
मै जल की नाई बह गया, और मेरी सब हड्डियों के जोड़ उखड़ गए।
मेरा हृदय मोम हो गया, वह मेरी देह के भीतर पिघल गया।
मेरा बल टूट गया, मैं ठीकरा हो गया और मेरी जीभ मेरे तालू से चिपक गई, और तू मुझे मारकर मिट्टी में मिला देता है।
क्योंकि कुत्तों ने मुझे घेर लिया है, कुकर्मियों की मण्डली मेरी चारों ओर मुझे घेरे हुए है, वह मेरे हाथ और मेरे पैर छेदते हैं।
मैं अपनी सब हड्डियाँ गिन सकता हूँ, वे मुझे देखते और निहारते हैं;
वे मेरे वस्त्र आपस में बाँटते हैं, और मेरे पहिरावे पर चिट्ठी डालते हैं।
परन्तु हे यहोवा तू दर न रह; हे मेरे सहायक, मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर।
मेरे प्राण को तलवार से बचा, मेरे प्राण को कुत्ते के पंजे से बचा ले!
मुझे सिह के मुँह से बचा, हाँ जंगली सांढ़ों की सींगों में से तू ने मुझे बचा लिया है।
मैं अपने भाइयों के सामने तेरे नाम का प्रचार करूँगा। सभा के बीच में तेरी प्रशसा करूँगा।
हे यहोवा के डरवैयो उसकी स्तुति करो! हे याकूब के वश, तुम सब उसकी महिमा करो! और हे इस्त्राएल के वंश, तुम उसका भय मानो।
क्योंकि उस ने दु खी को तुच्छ नहीं जाना और न उससे घृणा करता है, और न उससे अपना मुख छिपाता है पर जब उस ने उसकी दोहाई दी, तब उसकी सुन ली। बड़ी सभा में मेरा स्तुति करना तेरी ही ओर से होता है;
मैं अपने प्रण को उस से भय रखने वालों के सामने परा करूँगा।
नम्र लोग भोजन करके तृप्त होंगे; जो यहोवा के खोजी हैं वे उसकी स्तुति करेंगे। तुम्हारे प्राण सर्वदा जीवित रहें।
पृथ्वी के सब दूर–दूर देशों के लोग उसको स्मरण करेंगे और उसकी ओर फिरेंगे; और जाति–जाति के सब कुल तेरे सामने दण्डवत् करेंगे।
क्योंकि राज्य यहोवा ही का है, और सब जातियों पर वही प्रभुता करता है।

पृथ्वी के सब हष्टपुष्ट लोग भोजन करके दण्डवत् करेंगे; वह सब जितने

मिट्टी में मिल जाते है, और अपना अपना प्राण नहीं बचा सकते, वे सब उसी के सामने घुटने टेकेंगे। एक वश उसकी सेवा करेगा; दूसरी पीढ़ी से प्रभु का वर्णन किया जाएगा।
वह आयेंगे और उसके धर्म के कामों को एक वश पर जो उत्पन्न होगा यह कहकर प्रगट करेंगे कि उसने ऐसे–ऐसे अद्‌भुत काम किये।

10. परमेश्वर अपने वचन के पढ़े जाने पर आशीष प्रदान करे। मैं इस प्रातः इस मौके पर पाँच शब्द लेना चाहता हूँ, और इस सुबह आप जो कि आराधना कर रहे हैं उनके लिये इन पाँच शब्दों के आसपास उस बात को प्रगट करना चाहता हूँ जो कि मेरे हृदय में है। मैं इन पाँच शब्दों को लेता हूँ, **जीना, मरना, दफन होना, जी उठना, आगमन**।

11. और मैं सोचता हूँ कि कवि ने इस बात को गाने में बहुत अच्छी तरह से प्रगट किया, जिसको कि मैं कहना चाहता हूँ जबकि उसने इस गाने को लिखा।

जीते हुये उसने मुझसे प्रेम किया, मरते हुये उसने मुझे बचा लिया
दफन होकर वह मेरे पापों को बहुत दूर ले गया
फिर से जी उठकर उसने मुझे हमेशा के लिये सेंत–मेंत धर्मी ठहरा दिया।
किसी महिमायुक्त दिन वह आयेगा, ओह मेरे परमेश्वर।

12. उसके जीवन की तरह किसी ने भी जीवन नहीं जिया, क्योंकि जब वह जन्मा था तो वह देह में प्रगट परमेश्वर था। वह उस बात का प्रगटीकरण था कि परमेश्वर पिता के रूप में क्या है। और चूँकि परमेश्वर पिता प्रेम था, इसलिये यीशू प्रेम का सम्पूर्ण प्रगटीकरण था। वह उस पहले समय से ही प्रेम था जब कि उसके छोटे शिशु हाथ अपनी माता के सुन्दर गालों का स्पर्श कर रहे थे। वह प्रेम था।.

13. और मैं आज सोचता हूँ कि यह वही स्थान है जहाँ बहुतेरे यह पहचानने में चूक जाते हैं कि वह प्रेम था। ''परमेश्वर प्रेम है, और वे जो प्रेम करते हैं, परमेश्वर द्वारा जन्म पाये हुये होते हैं।''

14. ''परमेश्वर ने ससार से ऐसा प्रेम किया, अर्थात उनसे प्रेम किया जिनसे प्रेम किया ही नहीं जा सकता, कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास लाये, नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाये।''

15. जब वह इस पृथ्वी पर था तब उसने अपने प्रेम को विभिन्न तरीकों से प्रगट किया, और अब इस बात पर कोई तर्क–वितर्क किया ही नहीं जा सकता है कि उन सभी जीवों में जो कि अब तक जीवित रहे, वह सबसे अधिक प्रेम करने वाला था। और मैं सोचता हूँ कि यहाँ अपने जीवन में वह परमेश्वर को प्रगट कर रहा था। और एक ही तरीका है जिसके द्वारा हम लोगों में परमेश्वर को प्रगट कर सकते हैं, ओर वह प्रेम के द्वारा।

16. और उसने उस वक्त क्या किया था जब उसने उस समय की शायद सबसे भ्रष्ट स्त्री को पकड़ा था। उन्होंने उसे दोषी पाया था, और बच निकलने का कोई तरीका नहीं था, जब वह व्याभीचार में पायी गयी थी। और वे घसीटते हुये उसे यीशू के सामने लाये, और कहा, ''तू क्या कहता है कि इसका क्या करना चाहिये?''

17. और जब वह उसकी तरफ मुड़ा, और कहा, ''मैं तुझे दोषी नहीं ठहराता। जा और फिर पाप न करना।'' उसे सड़क पर फेंकने के बजाय ताकि वे लोग उसको घसीटते और भेड़ियों की तरह टूट पड़ते और पत्थरवाह करके, उसके जीवन को ले लेते, उसका कोमल, दयालू व प्रेम से भरा हुया हृदय, उसके पाप में नीचे तक जाता है, जिसमें की वह थी और कहता है ''मैं तुझे दोषी नहीं ठहराता। तू बस जा और फिर पाप न करना।''

18. और जब वह लाजरस की कब्र पर जा रहा था, मैं सोचता हूँ कि वह एक और बड़ा समय था जब उसने उस बात को प्रगट किया कि परमेश्वर मनुष्यों के लिये क्या है। वह केवल वही परमेश्वर नहीं है जो कि बुरा से बुरा पाप को जो कि कभी किया जा सकता है, क्षमा कर सकता है, और अपने क्षमायुक्त प्रेम से दोषी को निर्दोष बना सकता है। परन्तु जब मृत्यु हमें खामोशी से लिटा देती है, उसको फिर भी हमारी चिन्ता रहती है। मैं

सोचता हूँ उसने इस बात को बहुत अच्छी तरीके से जब प्रगट किया जब वह मारथा और मरियम के साथ उस सड़क पर जा रहा था; जब वह एक ऐसे घर में आया जहाँ मृत्यु ने एक प्यारे व्यक्ति के जीवन को समाप्त कर दिया था। और जब वह कब्र की तरफ जा रहा था, वह फिर भी परेमश्वर था और जानता था कि वह उसको मुर्दो में से जिला देगा, वह यह जानता था कि उसे यह बताया जा चुका है कि उसके वचनों में उसको कब्र से जिला उठा देने की सामर्थ है; फिर भी जब उसने मारथा और मरियम को और जो लाजरस से प्रेम करते थे, रोते हुये देखा, बाइबिल कहती है वह रोया। यह क्या था? उसका महान हृदय जो कि प्रेम से भरा हुआ था! जब उसने देखा कि वह व्यक्ति और उसके–उसके मित्र परेशानी में हैं; वह भी उनके साथ परेशान हुआ।

19. मैं यह जानकर बहुत प्रसन्न हूँ कि वह उनके बीच में पाया जाता है जिनका हृदय टूटा हुआ होता है। वह ऐसा नहीं है कि हमारे दु:खों में हमें छोड़ दे। वह हमारे साथ तब भी खड़ा रहता है जब सब कुछ असफल हो जाता है, और पृथ्वी की पहुँच की आखिरी आशाऐं अपने अन्तिम छोर तक नहीं आ जातीं, वह फिर भी परमेश्वर है और वह हमसे प्रेम करता है। वह परमेश्वर का प्रगटीकरण था।

20. और ओह, मैं इस बात पर कितना विश्वास करता हूँ कि वह अपने लोगों से चाहता है कि वे उसकी आत्मा से इतना अधिक अभिषिक्त हो जायें, कि हम एक दूसरे के पास उनके परखे जाने के समय और उनकी परेशानियों में जायें, उसकी सहानुभूति को प्रगट कर सकें, जो कि आत्मा से जन्मे हुये हृदयों से उड़ेली जाती है, ताकि कलीसिया में जीवते परमेश्वर के प्रेम को दिखा सकें। यह बहुत अच्छी तरह से प्रगट किया जा चुका है कि उसने क्या कहा था या कवि ने क्या कहा था। जीते हुये उसने मुझसे प्रेम किया।

21. जिस तरह से परमेश्वर ने अपने आप को यीशू मसीह में दिखाया, उसी तरह से उसने यह दिखाया कि उसने मानव जाति के साथ क्या किया। उसने अपना विचार मानव–जाति पर प्रगट किया कि उनको क्षमा

करना है और उनसे प्रेम करना है जिनसे कि प्रेम किया ही नहीं जा सकता। और मुझे इस ईस्टर की सुबह आश्चर्य होता है कि हम इस बात में कितने चूक गये हैं। हम उनसे प्रेम कर सकते हैं जो कि हमसे प्रेम करते हैं, परन्तु उसने उनसे प्रेम किया जो कि उसे प्रेम नहीं करते थे।

22. वह अब तक पृथ्वी पर प्रेम का सबसे महान व पहला प्रतिनिधित्व करने वाला था; जितनों को उसने प्रेम किया और जितने पृथ्वी पर रहने वाले थे, उन्होंने उसे तुच्छ जाना। कोई भी मनुष्य उसके समान प्रेम न कर सका और किसी भी मनुष्य की उतनी घृणा नहीं करी गयी जितनी की उससे की गयी। उन्होंने उससे घृणा की और उसे तुच्छा जाना, और उसे ठुकरा दिया परन्तु इस बात ने उसके प्रेम को कम नहीं किया। आखिर में, जब वह क्रूस पर लटका हुआ था, उस जीवन को जीने के बाद जिसमें सिवाय अच्छी बातों के कुछ नहीं था, जैसे कि दोषियों को क्षमा करना, बीमारों को चंगा करना, और बस उन्हीं कामों को किया जो कि अच्छे थे। जब वह अपनीआखिरी सासों में क्रूस पर लटका हुआ था, उसके पवित्र चेहरे पर वे लोग जो कि उसके पास खड़े हुये थे, अभद्र तरीके से वह उपहास उड़ाते हुये थूक रहे थे, परन्तु प्रेम से भरे हुये हृदय के साथ वह चिल्लाया ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि यह नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।''

23. वह समझ सकता था। परमेश्वर होते हुये वह समझ सकता है। इसलिये वह हमसे प्रेम कर सका जब कि हम प्रेम करने के लायक नहीं थे, क्योंकि वह परमेश्वर है और वह समझ सकता है। ''जीते हुये उसने मुझसे प्रेम किया।'' आज तक ऐसा जीवन कभी भी नहीं जिया गया क्योंकि वह प्रेम में लिपटा हुआ था।

मरते हुये उसने मुझे बचा लिया।

24. जबकि अदन की वाटिका में परमेश्वर यहोवा की माँग मृत्यू थी। पाप का दण्ड मृत्यू है और उसमें कोई भी फेरबदल नहीं किया जा सकता। इसको किसी और तरीके से नहीं किया जा सकता था। क्योंकि परमेश्वर सर्वोच्च है और वह अनन्त है और सम्पूर्ण पृथ्वी व स्वर्ग का न्यायी है। पाप

का दण्ड मृत्यु था और एक दूसरे के लिये कोई भी इस दण्ड को नहीं ले सकता था। क्योंकि हर एक व्यक्ति, चाहे वह एक दूसरे के लिये जान क्यों न दे दे, परन्तु वह तो आरम्भ से ही दोषी था। हम में से कोई भी व्यक्ति एक दूसरे की सहायता नहीं कर सकता था क्योंकि हम सब दोषी थे। ''हम पाप में पैदा हुये थे, अधर्म में ढाले गये, और इस संसार में झूठ बोलते हुये आये।'' और कहीं कोई आशा की किरण नहीं थी। परमेश्वर के द्वारा हम को मौत का दण्ड दिया गया था, और हर एक प्राणी जो कभी इस पृथ्वी पर चला, इस दण्ड के तले था। धर्मी जन उठ खड़े हो सकते थे और बड़े कार्य कर सकते थे, परन्तु वह तो आरम्भ से ही पापी थे।

25. केवल एक ही तरीका था जिसके द्वारा इसका दाम चुकाया जा सकता था और वह था परमेश्वर की स्वयं की मृत्यु के द्वारा। चूँकि परमेश्वर आत्मा है, अतः वह मर नहीं सकता था, परन्तु वह देह मे नीचे आया और अपने आपको उस प्रेमरूपी जीवन में प्रगट किया; ताकि वह उन सारी अच्छाइयों को जो कि उसमें थी ले सके और एक सर्वोच्च बलिदान के रूप में स्वेच्छा से दे सके, ताकि वह दोषियों का दोष दूर कर सके। हम सब पापी थे और इस ससार में हमारे बचने का कोई रास्ता नहीं था। वह इस पृथ्वी पर केवल देखे जाने के लिये ही नहीं, परन्तु वह एक बलिदान के रूप में मरने के लिये आया था।

26. हाबिल ने इस बात को जब प्रगट किया था जब उसने परमेश्वर को कैन से भी उत्तम बलिदान चढ़ाया था; जब वह एक छोटे मेमने को एक चट्टान के पास लेकर आया था जिसके गले के चारों तरफ अंगूर की बेल का एक टुकड़ा लटका हुआ था। वहाँ पर छोटा बच्चा चट्टान के ऊपर पड़ा हुआ था। वहाँ पर छोटा बच्चा चट्टान के ऊपर पड़ा हुआ था; उसकी ठुड्डी पीछे की तरफ खींची और एक–एक पत्थर के टुकड़े से उसके गले को काट दिया। और वह वहाँ पर पड़ा मर रहा था और मिमिया रहा था, और उसमें से लहू फूट के निकल रहा था और उसके छोटे सफेद बाल लहू में सन गये थे। हाबिल ने कलवरी को वहाँ प्रगट किया था।

27. जब परमेश्वर का मेमना जो कि जगत की उत्पत्ति से पहले घात हुआ था, दोषी पापियों की जगह लेने के लिये आया, और उसको कुचला

गया, मारा गया और उसका उपहास उड़ाया गया व उसका मजाक बनाया गया, और वह ऐसी मौत मारा गया जैसी मृत्यु सिवाये परमेश्वर के कोई भी प्राणी नहीं मर सकता; और उसके बाल जो कि उसके कंधे पर लटके हुये थे उनमें से लहू जमीन पर टपक रहा था, जो कि इस बात को प्रगट कर रहा था कि पाप कितना भयानक होता है, जबकि उसे मनुष्यों को पापमय जीवन से बचाने के लिये मरना पड़ा था। कोई भी उसकी तरह से नहीं मर सकता था। कोई भी उस मृत्यु को सहन नहीं कर सकता था। ऐसा कहा गया, ''जब उन्होंने उसकी पसली में छेदा तो वहाँ से लहू और पानी निकल कर आये थे।''

28. कुछ समय पहले मैं इसके विषय में किसी से बातचीत कर रहा था। और वह एक वैज्ञानिक था जिसने कहा था, ''केवल एक ही तरीका है जिससे कि यह हुआ होगा। ओर वह रोमन भाले के भुकने से नहीं मरा; और ना ही वह लहू निकल जाने से मरा, क्योंकि उसके शरीर में लहू बांकी था। वह रोमन भाले की वजह से या हाथों में ठुकी हुयी कीलों से या सर पर काँटों के मुकुट के रखे जाने से नहीं मरा। परन्तु इसलिये .....वह गम के कारण मर गया क्योंकि वह अपनों के पास आया और अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। वह इसलिये मरा क्योंकि उसका हृदय टूट गया था। जबकि वह जान गया था कि वही समय के प्राणी जिनको कि छुड़ाने के लिये वह मरने जा रहा है, उन्होंने उसके मुँह पर थूका है और वह मनुष्यों का ठुकराया हुआ है।''

29. आठ सौ साल पहले, इससे पहले की यह बात घटित होती, दाऊद उसी आवाज में चिल्ला उठा था जैसे वह कलवरी पर चिल्लाया था, ''मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया।''

30. क्या ही भयानक बात पाप करता है कि वह मनुष्यों को परमेश्वर की उपस्थिति से अलग कर देता है। और वह पाप–बलि था जिसको कि हमारे पापों के लिये चढ़ाया गया था। और वह परमेश्वर की उपस्थिति से दूर किया गया था। पाप ने उसे अलग कर दिया था। परमेश्वर ने हमारे पाप उस पर डाल दिये थे और वह परमेश्वर से अलग कर दिया गयाा था और

इसलिये वह चिल्ला उठा था, ''तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' और इसलिये उसे छोड़ दिया गया था और उसने इस जगह को लिया था और अपने लोगों को देखा था जिनके लिये उसको उद्धारकर्ता के रूप में आना था और अपने जीवन को देना था; उन्होंने उसे ठुकरा दिया था। और इस बात ने उसको इतना अधिक दुःख दिया कि उसका हृदय इतना अधिक टूट गया कि उसके शरीर का लहू और पानी और रसायन अलग-अलग हो गये।

31. मनुष्य कभी जान न पायेगा कि वह क्या था। यही कारण है कि कोई भी मनुष्य उसकी तरह कभी मर नहीं पायेगा। मैं इसकी परवाह नहीं करता कि आपको कितना भी तड़पाया जाये, आपके पैरों को कितना भी लकड़ी में ठोंकें, या आपको हल्के-हल्के आरी से काटें या हल्के-हल्के जलायें, आप उस तरह की मृत्यु नहीं मर सकते हैं क्योंकि आप की बनावट वैसी नहीं है। उसको तो परमेश्वर होना ही था। उसको तो मनुष्य से भी अधिक होना था। और इस बात पर सोच-विचार करना कि परमेश्वर की मृत्यु हुयी। वह संसार के लिये इतना अधिक दुःखी होने के कारण और टूटे हुये हृदय के कारण मरा, जब तक कि उसके शरीर में एक रसायन क्रिया आरम्भ होना न शुरू हो गयी जो कि आपके अन्दर नहीं हो सकती है। आप उसकी तरह कष्ट नहीं उठा सकते हैं। आप के लिये कोई तरीका ही नहीं है कि आपको उस तरह का दुःख हो। अतः केवल एक ही है जो कि इसे कर सकता था और उसने इसे किया।

32. पृथ्वी और आकाश के बीच में एक अनमोल जीवन लटका हुआ था जिसको कि नंगा करके और लज्जित करके वहाँ ऊपर लटका दिया गया था जिसने सिवाये प्रेम करने के और अच्छी बातें करने के कुछ नहीं किया था। आप यह सोचिये कि अगर आपको नंगा कर दिया जाये तो आपकी स्थिति कैसी होगी; जितना लज्जित वहाँ परमेश्वर लटका हुआ हो रहा था, आप उसको नहीं समझ पायेंगे। मैं जानता हूँ कि क्रूस की मूर्ति पर वह छोटी सी चीज होती है जैसे कि कुछ उसके चारों तरफ लिपटा हो परन्तु वहाँ पर ऐसी कोई चीज उसके चारों ओर नहीं लिपटी हुयी थी। वह तो

चित्रकार ने क्रूस की मूर्ति पर बना दिया है। उन्होंने उसके कपड़े उसके ऊपर से उतार लिये थे। उसके ऊपर जो वस्त्र था उन्होंने उसके ऊपर से फाड़ लिया था और उस पर चिट्ठी डाली थी। उसको अत्यधिक लज्जित किया गया था। फिर भी परमेश्वर होते हुये उसे सहन करना पड़ा, और पापी उसके मुँह पर थूक रहे थे। फिर भी बहुत ही सादगी में लोगों के सामने नग्न अवस्था में मरना पड़ा। उस बात का ऐसा प्रभाव उस पर पड़ा कि उसने लहू और पानी को अलग कर दिया। इसमें कोई आश्चर्य नहीं.. ....मैं सोचता हूँ कि कवि ने इस बात को बहुत अच्छी तरह से प्रगट किया जब उसने यह कहा :–

उन फटती हुये चट्टानों के बीच और अधकारमय आसमानों के बीच

मेरे उद्धारकर्ता ने अपना सिर झुका लिया और मर गया,

परन्तु उस फटे हुये पर्दे ने उन स्वर्ग के आनन्दों के लिये और अनन्त दिन में प्रवेश करने के रास्ते को प्रगट कर दिया।

33. निश्चय ही, उसको ही इसे करना था। मनुष्य और परमेश्वर के बीच में एक पर्दा लटका हुआ था, और उस फटे हुये पर्दे ने उन स्वर्ग के आनन्दों में और अनन्त दिन में प्रवेश करने के रास्ते को प्रगट कर दिया। कलवरी के कुछ मायने हैं, वह उससे भी जयादा मायना रखती है जितना कि हम कभी प्रगट कर सकते हैं। निश्चय ही। जीते हुये उसने मुझे प्रेम किया, मरते हुये उसने मुझे बचा लिया।

दफन होकर वह मेरे पापों को बहुत दूर ले गया!

34. अब उस बात को दोषी ठहराया जा चुका है। पाप की पकड़ अब और नहीं रही। पाप की उस वक्त मृत्यु हो गयी थी जब वह क्रूस पर चिल्ला उठा था कि, ''पूरा हुआ।'' अब वह मर चुका है। वह समाप्त हो चुका है। वह शक्तिहीन हो चुका है। वह मृत हो चुका है। आप लोग जरा इसके विषय में सोचिए। वह पाप जो कि मानव जाति का शत्रु था, मृत हो चुका है, उसमें अब कोई जीवन नहीं है, उसका अब कोई प्रभाव नहीं रहा। उसका कोई प्रभाव हो ही नहीं सकता। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि सूरज ने अपना

प्रकाश बद कर दिया, और सितारों ने चमकना छोड़ दिया, पृथ्वी पर अंधियारा छा गया; इन सभी का छुटकारा हो रहा था।

35. अब वह मृत हो चुका है, वह दफन हो चुका है और उसमें कोई जीवन शेष नहीं रहा। उसमें और अधिक जीवन नहीं रहा सकता है तब तो उसको दफन होना है। क्या दफन हुआ था? परमेश्वर की देह दफन हुयी क्योंकि वह एक पाप–बलि थी। वह तो जला हुआ मेमना थी जो कि अधर्म की आग के द्वारा जलायी गयी। वह पाप रहित मेमना जो कि किसी पाप को नहीं जानता था, वह परमेश्वर जो कि कोई गलत बात को नहीं जानता था; उसका जीवन दिया गया और वह पाप बलि वहाँ पर लटकी हुयी थी। ''दफन होकर वह मेरे पापों को बहुत दूर ले गया।'' उसको दफन होना था। उस देह को, उस पाप–बलि को दफन होना था।

36. यही कारण है कि बहु तेरे एक–एक करके इस जल–कुण्ड में यीशू मसीह के नाम का बपतिस्मा लेने आयेंगे। क्यों? कुछ घटित हुआ है। उस आत्मा ने जो कि उसकी देह से निकलते समय चिल्ला उठी थी ''पूरा हुआ'', उसने हमारी देहों में पाप को दोषी ठहरा दिया है। और हमें उसको दफन करना चाहिये ताकि फिर हम कभी उसे याद न कर सकें। मैं आनन्दित हूँ कि ऐसा हुआ है।

37. जब कोई चीज दफन होती है तो वह छिप जाती है और वह नजरों से दूर चली जाती है। ''और दफन होकर, वह मेरे पापों को बहुत दूर ले गया।'' परमेश्वर हमारे पापों को और अधिक देख नहीं सकता है क्योंकि वे दफन हो गये हैं। वे कहाँ दफन हुये हैं ? भूल जाने वाले समुद्र में। आप उस भूल जाने वाले समुद्र के विषय में सोचें! परमेश्वर उन्हें और अधिक याद नहीं कर सकता है क्योंकि वे मृत और दफन दोनों हो चुके हैं। वे और अधिक याद भी नहीं किये जा सकते। वे परमेश्वर की स्मरण शक्ति से बाहर हैं।

38. उसने इस 'दफन' होने को पुराने नियम में दिखाया था। उनके पास दो थे.....पवित्र स्थान को शुद्ध किये जाने पर उनके पास एक पाप बलि थी। और वह पाप बलि यह थी कि वे दो बकरीयों को लेवे थे और एक

बकरी को मार डालते थे और उस मृत बकरी के ऊपर जो पाप थे वह जीवित बकरी के ऊपर डाल दिये जाते थे।

39. स्मरण रखिये कि यीशू भेड़ था। वह मेमना था परन्तु यहाँ पर वह बकरी बन गया, वह धार्मिकता था क्योंकि वह भेड़ अर्थात परमेश्वर था। परन्तु वह एक बकरी अर्थात पाप के रूपमें आया ताकि वह मेरे और आपके लिये पापबलि बन सके; एक भेड़ से एक बकरी बना गया।

40. यीशू को दोनों पशुओं अर्थात दोनों बकरियों के रूप में चित्रित किया गया है। पहली बात यह है कि वह प्रायश्चित के लिये मरा; और दूसरी बात यह है कि प्रायश्चित के पाप बलि के बकरे पर डाले गये और बलि के बकरे ने लोगों के पापों को लिया और लोगों के पापों को ढोने के लिये दूर जंगल में चला गया। यह क्या था? यह हमारे प्रभु यीशू की मृत्यु व दफन होना था। मरते हुये! ''जीते हुये उसने मुझसे प्रेम किया। मरते हुये उसने मुझे बचा लिया। दफन होकर व मेरे पापों को दूर ले गया।'' उसने लोगों के पापों को अपने ऊपर लिया और उन्हें दूर नीचे अद्योलोक के निचले हिस्से में ले गया। वह पाप बलि था। उसके ऊपर लोगों के पाप थे। वह उनके लिये मरा। और पाप उसके ऊपर डाले गये और वह हमारे पापों को बहुत दूर ले गया, इतने दूर की परमेश्वर उनको और अधिक नहीं देख सकता है। आप जरा इसके विषय में सोचिए। ओह, कलीसिया चिल्ला के कह सकती है, ''हालेलुइया ऐसे उद्धारकर्ता के लिये।''

41. इतना ही नहीं कि हमारे पाप क्षमा हो चुके हैं, परन्तु वे भूल जाने वाले समुद्र में दफन हो चुके हैं कि उनको और अधिक याद नहीं किया जा सकता है। ''दफन होकर वह मेरे पापों को बहुत दूर ले गया।'' वे और अधिक याद नहीं किये जा सकते क्योंकि वे जा चुके हैं। वे परमेश्वर की आँखों से दूर हैं। वे लकवाग्रस्त हो चुके हैं। उनको तलाक दिया जा चुका है। वे दूर किये जा चुके हैं। परमेश्वर उनको और अधिक याद नहीं करता है। क्या? कलीसिया को इस सुबह इस बात को जानने के बाद कि हमारे पाप और अधिक याद नहीं जायेंगे, आनन्दित होना चाहिये। उनको भूल जाने वाले समुद्र में डाल दिया गया है, उनको ऐसी कब्र में डाल दिया गया

है जहाँ से वह फिर से जीवित नहीं हो सकते हैं। वे हमेंशा के लिये मृत हो चुके हैं और भुलाये जाये चुके हैं। वे ऐसे हो गये हैं जैसे कि उनको किया ही नहीं गया हो। ''मरते हुये उसने मुझे बचा लिया। परन्तु दफन होकर वह मेरे पापों को बहुत दूर ले गया।'' वो उनको इतनी दूर ले गया कि वे भूल जाने वाले समुद्र में चले गये। ओह परमेश्वर ! हम जानते हैं कि उन बातों का हमारे मध्य में निश्चित रूप से विश्वास किया जाता है, और निश्चित रूप से बातें सत्य हैं। वे परमेश्वर की सच्चाइयाँ हैं। वे सारी महान बातें मानवीय प्रगटीकरणों से बाहर हैं। हम ऐसी बातों के लिये कभी भी अपनी कृतज्ञता प्रगट नहीं कर सकते हैं।

42. परन्तु ओह, वह ईस्टर ! ''जीवित होकर उसने हमेंशा के लिये सेंत मेंत धर्मी ठहरा दिया।''

जीते हुये उसने मुझसे प्रेम करा। मरते हुये उसने मुझे बचा लिया।
दफन होकर वह मेरे पापों को बहुत दूर ले गया।
(यह ठीक बात थी)
परन्तु जीवित होकर उसने धर्मी ठहरा दिया।

43. जी उठना क्या था? यह परमेश्वर की रसीद थी कि बिल का भुगतान किया जा चुका है। ''जीवित होकर, उसने हमेंशा के लिये सेंत मेंत धर्मी ठहरा दिया।'' ओह; वह क्या ही उद्धारकर्ता था जो जीवित हुआ! परमेश्वर ने क्या किया था? एक मनुष्य दुःख उठा सकता है, मर सकता है, दफन हो सकता है। परन्तु ईस्टर इन सभी में सबसे महान था क्योंकि यह परमेश्वर की मंजूरी थी, ''मेरे नियमों का पालन किया गया है, मेरी शर्तों का पालन किया गया है, और यह यीशू था।'' उसने उसको मरे हुओं में से जिला उठाया ! ''जीवित होकर उसने हमेंशा के लिये सेंत मेंत धर्मी ठहरा दिया।'' उसका पवित्र नाम धन्य होवे।

44. इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि यह भावनाएँ लेकर आता है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि मानवीय हृदय इसको अपने अन्दर नहीं समा सकता है! ओह, हम अपने विजयी विश्वास के साथ वहाँ पर खड़े हो सकते हैं और कह सकते हैं, ''हमें हमेंशा के लिये सेंत मेंत धर्मी ठहरा दिया गया

है'', क्योंकि वह मरा और दफनाया गया और परमेश्वर ने उसे ईस्टर की सुबह फिर से जिला उठाया। फिर परमेश्वर ने यह दिखाया कि जितनी बातों को उसने करा था, उन सभी को ग्रहण किया गया। सभी बातों का सेंत मेंत दाम चुकाया जा चुका है, आप स्वतंत्र होकर अब जा सकते हैं ! ''जीवित होकर उसने हमेंशा के लिये सेंत–मेंत धर्मी ठहरा दिया।''ओह, कोई भी उस महान दिन को न तो जान सकता है और नही उसके विषय में सोच सकता है जब वह जी उठा था। और स्वर्गदूतों ने स्वर्गों के स्वर्ग में इस बात को देखा और उन्होंने परमेश्वर की स्तुति में गाया था और आनन्द मनाया था; जबकि पुराने नियम के सत स्वर्गलोक में हालेलुइया! चिल्ला उठे थे''। ''जीवित होकर. धर्मी ठहरा दिया''। जब वह महान आवाज आयी तब स्वर्ग हिल गया, पृथ्वी हिल गयी, स्वर्गलोक हिल गया और स्वर्ग हिल गया। उस कब्र में से वह जी उठा! ''जीवित होकर उसने हमेशा के लिये सेंत–मेंत धर्मी ठहरा दिया।'' ओह मेरे परमेश्वर !

45. तब जो संत,जिनकी मृत्यु उसमें हो चुकी है, इस गाने को गा सकते हैं, जब हम वहाँ पर उस आश्चर्यजनक अनुग्रह को देखते हैं, और उस बात को देखते हैं कि उसने क्या किया था। देखा आपने? परमेश्वर की मोहरयुक्त मंजूरी को!'' थोड़ी देर रह गयी है कि संसार मुझे न देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे, क्योंकि मैं मरे हुओं में से जी उठूंगा और तुम्हारे अन्दर रहूंगा; उस बात के पुष्टिकरण के लिये और उस बात को प्रमाणित करने के लिये कि जो परमेश्वर ने कहा है, वह सत्य है और जो मैं कहता हूँ वह सत्य है, ''यीशू ने कहा, ''मै पवित्र आत्मा के रूप में आऊंगा। मैं अपना ढेरा तुम्हारे अन्दर बनाऊँगा, और हमेंशा के लिये तुम्हारे साथ रहूंगा।'' तब जो संत जिनके हृदय में पुनुरूत्थान की आशा है, इस गाने को गा सकते हैं :

उस चमकीली व बिना बादल की सुबह, जब मसीह में मरे हुये जी उठेंगें,

और उसकी पुनरूत्थान की महिमा में शामिल होंगे;

जब चुने हुये अपने उस घर में जो कि आसमानों के पार है, इकट्ठा

होंगे (उस सिद्ध आश्वासन के साथ, परमेश्वर की मोहर के साथ, स्वयं परमेश्वर से मिली लिखित रसीद के साथ)।

जब वहाँ नाम बुलाया जायेगा, मैं वहाँ पर होऊँगा। (ओह परमेश्वर! तू जल्दी आ)

ओह, इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि उन्होंने कहा जीते हुये उसने मुझसे प्रेम किया,

मरकर उसने मुझे बचाया।

दफन होकर वह मेरे पापों को बहुत दूर ले गया। ओह! जीवित होकर उसने हमेंशा के लिये सेंत–मेंत धर्मी ठहरा दिया।

46. पाप क्षमा किये जा चुके हैं। ये सारी बलियाँ मन–गढन्त हो सकती थीं, सारी बलियाँ असफल हो सकती थीं। परन्तु ईस्टर की सुबह, जब वह जी उठा, परमेश्वर ने इस बात को प्रमाणित किया कि उसने इसे ग्रहण किया था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि यह बात मानवीय हृदय से हालेलुइया निकलवाती है! इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि यह बात मनुष्यों को मृत्यु के सामने खड़े रहने की सामर्थ प्रदान करती है ! यह बात लोगों से उन बातों को कहलवाती है जो कि नहीं है, जैसे कि वह हों! परन्तु क्यों? ''जीवित होकर उसने धर्मी ठहरा दिया।'' आप कैसे जानते हैं कि वह जी उठा है? क्योंकि वह हमारे हृदयों में जी उठा है; और हमेंशा के लिये सेंत–मेंत धर्मी ठहरा दिया।

47. चालीस दिन के पश्चात जब वह खड़ा हुआ था और अपने बच्चों से बातचीत कर रहा था, पृथ्वी की आकर्षण शक्ति ने अपनी पकड़ छोड़ दी। कार्य पूरे किये जा चुके थे। दण्ड चुकाया जा चुका था। उसके हाथ में रसीद थी। वह परमेश्वर की रसीद थी। उसके पास बच्चे थे जो कि उसकी कलीसिया है अर्थात विश्वासी हैं। सारे पापों पर जय प्राप्त की जा चुकी थी। रास्ते को साफ कर दिया गया था। वह पृथ्वी पर औरअधिक नहीं रह सकता था। कौन सी बात हमें यहाँ पर पकड़ कर रखती है? पृथ्वी की आकर्षण शक्ति। जब पृथ्वी की आकर्षण शक्ति टूटना शुरू हुयी,तो

उसने अपनी पकड़ छोड़ दी। क्यों? तब सब कुछ समाप्त हो चुका था। क्या हुआ था? वह पृथ्वी से उठने लगा।

48. ''सारे जगत में जाओ और सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो'', यह बात उसके होठों से निकल कर आयी। ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जायेगा। और विश्वास करने वालों में यह चिन्ह होंगे। वे मेरे नाम से दुष्ट आत्माओं को निकालेंगे। वे नई–नई भाषा बोलेंगे। यदि वे सापों को उठा लें या नाशक वस्तु भी पी जायें तो भी उन की कुछ हानि न होगी। यदि वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, वे चगें हो जाएंगे। क्योंकि मैं जीवित हूँ.....पृथ्वी की आकर्षण शक्ति ने मेरे ऊपर अपनी पकड़ छोड़ दी है। पाप की कोई पकड़ बाकी नहीं रह गयी। मैं तुम्हारे लिये मरा। परमेश्वर ने इसे प्रमाणित किया है और पुनरूत्थान की रसीद दी। और चूँकि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित रहो! किसी दिन मैं वापस आऊँगा।''

49. किसी दिन, ओह किसी महिमायुक्त दिन वह आ रहा है। फिर एक.... जीना, मरना, दफन होना, जी उठना, आना, यह आज कलीसिया की आशा है।

जीते हुये उसने मुझसे प्रेम किया। मरते हुये उसने मुझे बचा लिया।

दफन होकर वह मेरे पापों को बहुत दूर ले गया। जीवित होकर उसने मुझे हमेशा के लिये धर्मी ठहरा दिया। किसी दिन, ओह किसी महिमायुक्त दिन व आ रहा है !

यह क्या था ? J.E.S.U.S. इन पाँच शब्दो में पाँच बातें हैं।

जीते हुए उसने मुझसे प्रेम किया। मरते हुए उसने मुझे बचा लिया। जीवित होकर उसने मुझे हमेशा के लिए सेंतमेंत धर्मी ठहरा दिया।

किसी दिन, ओह ! किसी महिमायुक्त दिन वह आयेगा।

50 हम उसके दूसरे आगमन की बाट जो रहे हैं। ''और इन में किसी उजली और बादल रहित सुबह जब मसीह में मरे हुये जी उठेंगे और उसके

पुनरूत्थान की महिमा में शामिल होंगे; जब उसके चुने हुए आसमानों के पार अपने घरों में इकट्ठा होंगे, जब वहाँ नाम बुलाया जायेगा, मैं वहाँ पर होऊँगा।'' क्यों? मेरे पास रसीद है। वह जी उठा है ! आप कैसे जानते हैं? वह मेरे हृदय में रहता है। वह अपनी विश्वास करने वाली कलीसिया के हृदय में रहता है।

51. आप इसके विषय में सोचिए। जैसे ही हम वापस आएगें, जल–कुण्ड गर्म पानी के साथ बपतिस्मे की सभा के लिए कुछ ही क्षणों में तैयार हो जायेगा।

आईये, अब कुछ क्षणों के लिए हम अपने सरों को झुकाएँ।

52. मैं आज आश्चर्य करता हूँ कि यदि हमारे बीच में कोई एक ऐसा है या बहुत से ऐसे हैं जिन्होंने इस बलि को इतना अधिक नहीं सराहा कि वे उसे ग्रहण करें, और आप ये चाहते हैं कि आपको प्रार्थना में स्मरण किया जाये, ताकि परमेश्वर आपके हृदय से अनोखी तरह से बातचीत करे ताकि आप उसकी बलि को जो कि आपके प्राण को स्वच्छ करती है, ग्रहण करने पायें।

53. और स्मरण रखिये कि आज हम केवल उस समय को ही नहीं मना रहे कि हम नई टोपीयाँ पहने और नये कपड़े पहने, जो कि ठीक बात है, परन्तु यह उस बात का प्रतीक है कि कुछ नया हुआ है। परमेश्वर ने कुछ नया किया है। जो कि एक ठीक बात है। यह केवल वही बात नहीं है। ईस्टर का यह मतलब नहीं होता है। या ईस्टर खरगोशों का शिकार करना या अन्डे और छोटे सफेद मुर्गी के बच्चे, ओर वगैरह–वगैरह, भाई ईस्टर का यह मतलब नहीं है।

54. ईस्टर तो एक जय है, ये वो जय है जो कि परमेश्वर ने इस पृथ्वी को दी, कि उसने अपने पुत्र को मरे हुओं में से जिला उठाया। ''कि जो कोई उस पर विश्वास करे वो नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाये।''

55. पुनुरूत्थान आपके जीवन में भी हो सकता है। अगर यह आपके पास नहीं है, क्या आप इस सुबह अपने हाथ को उठाऐंगे, जबकि हमारे सर

झुके गये हैं, और हम यह कहेंगे, ''परमेश्वर मुझे स्मरण रख ताकि पुनरूत्थान रूपी जीवन मेरे हृदय में आने पाये'' क्या आप अपने हाथ को उठाऐंगे और कहेंगे, ''जबकि मैं अपने हाथों को उठाता हूँ; भाई ब्रन्हम आप मेरे लिए प्रार्थना करें?'' परमेश्वर आपको आशीष दे। परमेश्वर आपको आशीष दे। क्या कोई और है जो कि अपना हाथ उठाएगा और कहेगा, ''भाई, मेरे लिये प्रार्थना करें, मैं इस पुनरूत्थान रूपी जीवन को ग्रहण करना चाहता हूँ।''

उस उजली और बादलरहित सुबह
(आप इसके विषय में सोंचे जबकि हम .....)
मसीह जी उठेगा,
और उसके पुनरूत्थान की महिमा में शामिल होंगे।
जब चुने हुये तट के दूसरी तरफ इकट्ठा होंगे,
जब वहाँ नाम बुलाया जायेगा, मैं वहाँ पर होऊँगा।

जब वहाँ नाम बुलाया जायेगा,
जब वहाँ नाम बुलाया जायेगा,
(अगर आप निश्चित नहीं हैं, तो ठीक अभी हों लें)
वहाँ बुलाया जायेगा,
जब वहाँ नाम बुलाया जायेगा, मैं वहाँ पर होऊँगा।
आइये हम स्वामी के लिये परिश्रम करें .....
(यह नए सत लोग हैं) .....सूर्य
आइये हम बातचीत करें .....

56. अब आप जो मसीही हैं, परमेश्वर से इस बात की प्रतिज्ञा करना चाहते हैं कि और परिश्रम करें, यहाँ नीचे आ जाइये, अपने हाथों को उसकी ओर उठाइए।

और वहाँ जब नाम बुलाया जाएगा, मैं वहाँ पर होऊँगा
परमेश्वर आपको अशीष दे।
जब वहाँ नाम पुकारा जायेगा,
जब वहाँ नाम पुकारा जायेगा,

जब वहाँ नाम पुकारा जायेगा,
जब वहाँ नाम पुकारा जायेगा, मैं वहाँ पर होऊँगा।

57. प्रिय परमेश्वर, आपने हर एक हृदय को जो कि यहाँ है, देखा है, और आप उनकी प्रेरणाओं को और उनके उद्देश्यों को जानते हैं। और मैं करूणा के लिए प्रार्थना करता हूँ। परमेश्वर, ऐसा प्रदान कीजिए कि इन लोगों को करूणा प्रदान की जाये। वे इस प्रातः इस घड़ी की आराधना के लिए आए हैं। वे यहाँ पर इस जगह आपके वचन को, जैसा कि हमने उसको बोला है, सुनने आये हैं।

58. जब आपने जीवन को जीया, आपकी तरह किसी का जीवन नहीं था। जब आप की मृत्यु हो रही थी, आप केवल वो एक ही थे जो उस तरह थे मर सकते थे। जब आप दफन हुए, आप हमारे पापों को दूर ले गये; लोगों के पापों को अपने ऊपर लेकर, आप उन्हें भूल जाने वाले समुद्र में ले गये। परन्तु जीवित होकर आपने हमेंशा के लिये सेंतमेंत धर्मी ठहरा दिया। और हम आज खड़े हुए आपके आगमन की बाट जो रहे हैं।

59 परमेश्वर उन्हें आशीषित कीजिए। हमारी सहायता कीजिए। हमें इस बात का एहसास है कि हमारे पास अधिक समय नहीं है, क्योंकि वह बस दरवाजे पर हैं। और कोई भी.....और वैज्ञानिकों के अनुसार एक घंटे में राष्ट्र नाश हो सकते हैं। और पिता हम प्रार्थना करते हैं, जबकि हम इस ईस्टर की सुबह आपके आगमन के नजदीक खड़े हुए हैं, जो कि कलीसिया की आशा है। हजारों–हजारों वहाँ पृथ्वी की मट्टी में उस घड़ी की प्रतीक्षा कर रहे हैं, उनके प्राण वेदी के नीचे चिल्ला रहे हैं, ''और कितनी देर, परमेश्वर? ओर कितनी देर?'' मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ परमेश्वर कि आप हमसे बातचीत करेंगे। और आइये हम इस बात को याद रखें कि चाहे हम पृथ्वी पर कितना कुछ भी न कर लें, यह बहुत थोड़ा सा ही है। और एक ही बात हम कर सकते हैं और वह यह है कि हम आपके आगमन की बाट जोहें, और हर एक को बतायें। यह सन्देश बहुत जरूरी है। होनें पाये कि हम इसको लोगों को जल्दी से बता दें कि आप किसी भी समय आ सकते हैं। इससे पहले कि यह बम्ब और मिसाइल जिनके विषय में वे

बताते हैं, जिनकी हजारों की सख्या में बौछार एक मिनट में पृथ्वी पर हो; इससे पहले कि वह घटित हो, परमेश्वर आप ने प्रतिज्ञा की है कि आप अपने लोगों को लेने आऐंगे। परमेश्वर, ऐसा ही होगा। अतः किसी भी मिनट कलीसिया के लिए एक पुनरूत्थान अर्थात ईस्टर हो सकता है; मसीह के द्वारा इस पापमय जीवन से अनन्त जीवन में जाने के लिये पुनरूत्थान हो सकता है। हमारी प्रार्थना सुनिए।

60. और आज, जबकि हम दूसरी सभाओं में जाते हैं, सन्डे स्कूल की शिक्षा में जाते हैं, हे परमेश्वर, आप फिर से बोलें, और ऐसा होने पाये कि बहुतरों के हृदय को अनोखी चेतावनी मिल सके। और ऐसा होने पाये कि वे दर्जनों की सख्या में इस प्रातः, इस ईस्टर की प्रातः जल–कुण्ड में यीशू के साथ दफन होने के लिये और उसके बलिदान को ग्रहण करने के लिये आयें। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है उनका सम्बन्ध किसी कलीसिया से है या किस धार्मिक मत के साथ वे संगति करते हैं, इस बात के कुछ मायने नहीं हैं। परन्तु क्या उन्होंने उस बलिदान को ग्रहण किया है? क्या वे इस बात का अंगीकार करते हैं कि उनमें कोई अच्छाई नहीं है और यह कि केवल यीशू ही वह था जो कि अच्छा था? वह हमारे बदले में मरा। और उसने हमारे पापों को लिया और उन्हें दफना दिया और हम अकेले परमेश्वर में खड़े हुए हैं। हमारी कलीसियाएँ हमारे पापों को दफन नहीं कर सकती हैं, हमारा अपना जीवन हमारे पापों को दफन नहीं कर सकता है, परन्तु मसीह ने हमारे पापों को भूल जाने वाले समुद्र में डाल दिया। परमेश्वर, अभी आप प्रदान कीजिये कि ये बातें आपकी नजरों में आपको महिमा देने वाली हों।

61. फिर आज रात्रि, आप अपनी पुनरूत्थान की सामर्थ् में आने पायें, और इस छोटी सी जगह को ऐसे हिला दें जैसे कि यह कभी हिलाई न गयी हो। होने पाये कि चिन्ह और चमत्कार प्रगट हों। परमेश्वर आप उस बात को फिर से दोहरायें जैसा कि दो रविवार पहले था, जब बीमार और दुःखी लोग अद्भुत तरीके से चंगे हो गये थे।

परमेश्वर, हम प्रार्थना करते हैं कि आज रात्रि आपकी महिमा के

लिये फिर से होने पाये।

62. परमेश्वर, हमारी गलतियों को क्षमा करें, और ऐसा होने पाये कि यह हममें से कुछ लोगों के लिये एक वास्तविक ईस्टर हो, हम सभी के लिये एक वास्तविक ईस्टर हो। और हममें से कुछ लोग जिन्होंने ईस्टर की आशीषों को कभी नहीं जाना, होने पाये कि मसीह उनके हृदय में एक नई आशा और एक नये जीवन के साथ ज़ी उठे। उनका इशारा कलवरी की ओर करे। क्योंकि हम यह यीशू के नाम में माँगते हैं। आमीन।

63 (टेप में रिक्त स्थान –सम्पा...) आपमे से कितने परमेश्वर को प्रेम करते हैं, अपना हाथ ऊपर उठायें। ओह मेरे परमेश्वर, यह कितना आश्चर्यजनक है !

64. भाई मकडावल मैंने सुना है कि आप के पास एक बच्चा है जिसका समर्पण किया जाना है। क्या आप सन्डे स्कूल सभा में वापस आ सकते हैं? ठीक है, यह अच्छा होगा। तभी हम छोटे बच्चों का समर्पण (DEDICATION) और इत्यादि करेंगे; अगर आप को सकोच न हो। यह ठीक है।

65. और अब हम सभा को कुछ समय के लिये विसर्जित करने जा रहे हैं ताकि आप अपनी जगहों पर जा सकें और अपना नाश्ता करके पुनः वापस आ सकें। हम आनन्दित हैं कि आप हमारे साथ हैं।

66. और अब आइये हम खड़े हो जायें। और वही गाना जिसको कि हमने कुछ क्षणों पहले गाया था, ''उस चमकीली व बादल रहित.....'' कितने लोगों में वह आशा है, आइये आपके हाथों को उठा हुआ देखें। आमीन।

उस चमकीली और बादल रहित सुबह
जब मसीह में मरे जी उठेंगे,
और उसके पुनरूत्थान की महिमा में भागीदार होंगे;
जब पृथ्वी पर के बचाये हुये लोग उस जगह एकत्र होंगे.....।

*****

जीना, मरना, दफन होना,
जी उठना, आगमन

भाई ब्रन्हम के द्वारा यह सन्देश मार्च 29, 1959 की ईस्टर सुबह को ब्रन्हम आराधनालय, जैफरसनविले इन्डियाना में दिया गया। चुम्बकीय टेप रिकार्डिंग से छपे हुए पन्ने पर ठीक–ठीक मौखिक सन्देश को लाने के लिए हर एक प्रयास किये गये हैं, और बिना किसी काट–छाँट किये हुए यह सन्देश छापा गया है ओर VOICE OF GOD RECORDINGS के द्वारा मुफ्त में बाँटा जाता है।

यह किताब विश्वासीयों के द्वारा स्वेच्छा से दिये गये दान के द्वारा उपलब्ध करायी जाती है।

2002 में छापा गया

VOICE OF GOD RECORDINGS
P.O. BOX 950, Jeffersonville, Indiana 47131 U.S.A.

VOICE OF GOD RECORDINGS INC.

India Office

No. 28, Shenoy Road, Nungambakkam, Chennai - 600 034. South India.
Phone : 044-28274560 Fax : 044-28256970

कोपी राईट सूचना

सारे अधिकार सुरक्षित है। यह पुस्तक व्यक्तिगत प्रयोग या मुफ्त में देने और एक औजार के समान यीशु मसीह का सुसमाचार फैलाने के लिये
घर के प्रिंटर पर छाप सकते हैं।

इस पुस्तक को बेचना, अधिक मात्रा में फिर से छापना, वेब साईट पर डालना, दुबारा छापने के लिये सुरक्षित रखना, दूसरी भाषाओं में अनुवाद करना या धन प्राप्ति के लिये निवेदन करना निषेध है। जब तक की वायस ऑफ गोड रिकार्डिंग कि लिखित अनुमति प्राप्त ना कर ली जाये।

अधिक जानकारी या दूसरी उपलब्ध सामग्री के लिये कृपया संपर्क करें:

वायस ऑफ गोड रिकार्डिंग्स

पोस्ट बोक्स 950 जैफरसन विले, इन्डियाना 47131 यू. एस. ए.

www.branham.org